अवधिज्ञान – मनःपर्यवज्ञान

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

जैन दर्शन में आत्ममात्रसापेक्ष ज्ञान को प्रत्यक्ष माना गया है। अक्ष शब्द का अर्थ आत्मा किया गया, तब लोक व्यवहार में प्रत्यक्ष रूप से प्रसिद्ध इन्द्रिय प्रत्यक्ष और मानस प्रत्यक्ष की समस्या का समन्वय जैन दार्शनिकों ने 'सांव्यवहारिक प्रत्यक्ष' मान कर किया। इन्द्रिय और मनोजन्य ज्ञान को सांव्यवहारिक प्रत्यक्ष स्वीकार किया है। इसका कारण हैं कि एक तो लोकव्यवहार में तथा सभी इतर दर्शनों में यह प्रत्यक्षरूप से प्रसिद्ध है और प्रत्यक्षता के प्रयोजन इसमें पाया जाता है। इस तरह उपचार का कारण मिलने से इन्द्रियप्रत्यक्ष में प्रत्यक्षता का उपचार कर लिया गया है। वस्तुतः आध्यात्मिक दृष्टि में ये ज्ञान परोक्ष ही हैं। आत्मा से सीधे होने वाला ज्ञान प्रत्यक्ष कहा जाता है।

प्रत्यक्ष जो ज्ञान अपनी उत्पत्ति में सिर्फ आत्मा के ही व्यापार की अपेक्षा रखता है, मन और इन्द्रियों की सहायता जिसमें अपेक्षित नहीं है, वह प्रत्यक्ष है। जब आवरण विरल अथवा सम्पूर्ण रूप से हट जाता है तब आत्मा को ज्ञेय साक्षात्कार में बाह्य साधनों की अपेक्षा नहीं रहती है, अतः उस ज्ञान को प्रत्यक्ष कहा जाता है। प्रत्यक्ष तीन तरह का हैं– अवधिज्ञान, मनःपर्ययज्ञान और केवलज्ञान। केवलज्ञान सकल प्रत्यक्ष है ंऔर अवधि तथा मनःपर्यव विकल प्रत्यक्ष है। अवधिज्ञान और मनःपर्यवज्ञान आत्मा से पैदा होते हैं, अतः प्रत्यक्ष है। किन्तु अपुर्ण प्रत्यक्ष है, इसमें आवरण का सद्भाव बना रहता है अतः विकल प्रत्यक्ष है। इन तीन को नोइन्द्रिय प्रत्यक्ष भी कहा गया है, अर्थात् इन ज्ञानों में इन्द्रियों की अपेक्षा नहीं रहती है। ये ज्ञान आत्म सापेक्ष है।

आत्मा एवं पदार्थ के मध्य किसी तीसरे माध्यम की आवश्यकता नहीं होती है। इन्द्रिय प्रत्यक्ष को जब संव्यवहार प्रत्यक्ष कहा जाने लगा तब नोइन्द्रिय को पारमार्थिक प्रत्यक्ष कहा जाने लगा। नोइन्द्रिय प्रत्यक्ष अतीन्द्रिय ज्ञान है। इस ज्ञान में इन्द्रियों की सहायता के बिना सूक्ष्म, व्यवहित और विप्रकृष्ट पदार्थों को साक्षात्कार कर लेता है। पदार्थ दो तरह का होता है मूर्त

और अमूर्त। अवधिज्ञान और मनःपर्ययज्ञान केवल मूर्त पदार्थों को ही साक्षात्कार कर सकते हैं। ये क्षायोपशमिक होते हैं इसलिए अपूर्ण अतीन्द्रिय ज्ञान की कोटि में आता है। केवलज्ञान मूर्त और अमूर्त दोनों प्रकार का विषय है। केवलज्ञान क्षायिक है, ज्ञानावरण के सर्वथा क्षीण होने से उत्पन्न होता है, इसलिए वह परिपूर्ण अतीन्द्रिय ज्ञान है। प्रत्यक्ष के तीन भेदों में अवधिज्ञान का पहला स्थान है। अवधिज्ञान चारों गतियों में वर्तमान प्राणियों के इन्द्रियनिरपेक्ष और मनः प्राणिधान सापेक्ष विशिष्ट क्षयोपशम से होने वाला पुदगल परिच्छेदी ज्ञान अवधिज्ञान है। सम्यग् दर्शन आदि गुणों से उत्पन्न क्षयोपशमजन्य अवच्छिन्न विषय वाला ज्ञान अवधिज्ञान है।

सकल रूपी द्रव्यों को जानने वाला और सिर्फ आत्मा से उत्पन्न होने वाला ज्ञान अवधिज्ञान कहलाता है। पारमार्थिक प्रत्यक्ष में अवधि का पहला स्थान है। अवधिज्ञान अपनी सीमा से युक्त पदार्थों को ही जान सकता है। अवधि का अर्थ है मर्यादा। जो मर्यादित द्रव्य क्षेत्र काल आदि को जानता है वह अवधि है। जो ज्ञान आत्मा से सीधा होता है तथा रूपी पदार्थों को अपना विषय बनाता है वह अवधिज्ञान है।

जो अवधिज्ञान भव अर्थात् जन्म निमित्त होता है उसे भव प्रत्यय अवधिज्ञान कहते हैं। यह देव नारकीय जीवो को ही प्राप्त होता है और जिस अवधिज्ञान में ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से जो अवधिज्ञान प्राप्त होता है, वह क्षयोपशमिक अवधिज्ञान है। यह मनुष्य और तिर्यंचगति के जीवों को प्राप्त होता है। इनमें मात्र इतना ही अन्तर है कि एक जन्म से प्राप्त होता है और दूसरे में पुरूषार्थ करने से प्राप्त होती है।

मनः पर्यवज्ञान में इन्द्रिय और मन के उस प्रकार के सहयोग की अपेक्षा नहीं होती, जिस प्रकार का सहयोग मति और श्रुतज्ञान में अपेक्षित होता है। इस दृष्टि से यह स्वायत्त ज्ञान है—अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष है। दूसरे के मनोगत अर्थ को मन कहते हैं, क्योंकि वह अर्थ मन में रहता है। उस मनोगत अर्थ को आत्मा की सहायता से जो प्रत्यक्ष जानता है, उस ज्ञान को मनःपर्यवज्ञान कहते हैं। उसके मन के सम्बन्ध से उस पदार्थ का पर्ययण अर्थात् परिगमन करने को या जानने को मनःपर्ययज्ञान कहते हैं अर्थात् यह ज्ञान मनोवर्गणा के माध्यम से मानसिक भावों को जानने वाला ज्ञान है मनःपर्ययज्ञान है।

मनःपर्यय ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशमादिरूप सामग्री के निमित्त से परकीय मनोगत अर्थ को जानना मनःपर्ययज्ञान है मनःपर्ययज्ञान दो प्रकार का बताया गया है– ऋजुमति और विपुलमति। ऋजुमति मनःपर्यवज्ञान दूसरों के मनोगत भावों को सामान्य रूप से जानता है। जो अर्थ जिस प्रकार से स्थित है उसका उसी प्रकार से चिन्तन करनेवाला मन उसका उसी प्रकार से ज्ञापन करनेवाला वचन और उसको उसी प्रकार से अभिनय द्वारा दिखलानेवाला काय ऋजु है। जिसकी मति विपुल है वह विपुलमति कहलाता है। अवधिज्ञान और मनःपर्ययज्ञान विकल्पक समस्त पदार्थों को न जान कर सिर्फ रूपी पदार्थों को ही जानते हैं।